# पाठ - 26 क्रोध

## मुख्य विषय

यह आचार्य रामचंद्र शुक्ल का भाव और मनोविकार संबंधी निबंध है जिसमें क्रोध की उत्पत्ति, उसके कारण, प्रकार, लाभ और उसकी हानियां तथा उसके मनोवैज्ञानिक आधार का विशद विवेचन है।

## मुख्य बिन्दु

निबंध के तत्वों के आधार पर समीक्षा :-

1. प्रस्तावना - लेखक ने 'क्रोध' निबंध का प्रारंभ क्रोध के कारण का पता लगाने से किया है। लेखक के अनुसार क्रोध मनुष्य के हृदय में स्थित वह भाव है, जो दूसरे के द्वारा सताए जाने पर या इच्छा के अनुकूल काम न करने पर अपने-आप पैदा हो जाता है। इसके लिए कार्य-कारण संबंध स्पष्ट दिखाई देता है।
   - कई बार क्रोध उसी समय परिस्थिति से उत्पन्न किसी कारण से भी पैदा हो जाता है, जो अपनी रक्षा करने के लिए न होकर बदले की भावना से होता है। जैसे लेखक ने रेल से उतरने वाले दो अपरिचितों के परस्पर तमाचा मारने वाले उदाहरण से स्पष्ट किया है।जीवन में क्रोध की आवश्यकता भी होती है चाहे वह स्वयं के लिए हो या पूरे समाज का उससे लाभ होता हो।

2. विषय-वस्तु - निबंधकार कहता है जब कोई परिणाम को विचार किए बिना, अपनी सामर्थ्य को आँके बिना योजना बनाए बिना, विपक्षी पर टूट पड़े तो उसकी असफलता निश्चित ही है। परिस्थिति को देखते हुए यदि बुद्धि का प्रयोग कर क्रोध न करें तो भयंकर परिणाम से बच सकते हैं।
   - अतः क्रोध के मूल उद्देश्य को पहले समझना चाहिए। व्यक्ति, क्रोध दो कारणों से करता है- पहला, वह विपक्षी को डरा सकेः दूसरा, उससे क्षमा याचना या पश्चात्ताप करवा सके। अपने शत्रु की क्रोधपूर्ण चेष्टाओं को देखकर कई बार विपक्षी भयभीत होते हुए दिखाई दिए हैं। कई बार क्रोधी के सम्मुख उन्हें पश्चात्ताप करते भी देखा गया है। अपनी भूल के लिए वे अपने शत्रु से माफी तक माँग लेते हैं। इससे क्रोध करने वाला स्वतः उन्हें क्षमा प्रदान कर देता है।
   - कई बार क्रोध किसी के घमंड को खत्म करने के लिए भी किया जाता है। वहाँ क्रोध करने वालों का उद्देश्य केवल अपमान करके ही अभिमानी को नम्र बनाने का होता है, जिससे अपनी वास्तविकता को वह समझ सके। क्रोध में कभी घृणा और कभी दया का भाव भी मिला होता है।
   - क्रोध संक्रामक रोग की तरह भी होता है। अपने ऊपर क्रोध करते देखकर दूसरे का भी अपने मनोभावों पर कोई काबू नहीं रहता। इसीलिए क्रोध शांति को समाप्त करने वाला मनोविकार माना जाता है। धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र में ही नहीं अपितु सभ्य समाज में भी क्रोध पर संयम करने का उपदेश दिया जाता है।

- विशेष परिस्थितियों में धर्म के उद्धार के लिए, पवित्र भावों की रक्षा के लिए, अन्याय का विरोध करना ज़रूरी हो जाता है। ऐसा क्रोध धर्म में विश्वास को बढ़ाता है। संसार में शांति की स्थापना करता है। अतः इस प्रकार के क्रोध को पवित्र या पावन क्रोध की संज्ञा दी गई है।
- क्रोध करने पर दंड देना ज़रूरी हो जाता है। यह भी दो प्रकार का होता है-राजदंड और लोकदंड। राजदंड में यदि अधिकारवश कुछ लोग दंड देते हैं; जो न्याय के विरुद्ध हो सकता है, यह उपयुक्त नहीं क्योंकि कुछ लोगों से डरकर, अधिक शक्तिशाली बनने के कारण क्रोधवश दिया गया यह दंड कभी सात्विक नहीं हो सकता। जब लोककोप अर्थात् जनता का क्रोध होने पर दंड दिया जाता है, तब वह धर्मप्रधान और आदर्श की रक्षा करने वाला होता है।
- कई बार हम क्रोध का जवाब नहीं देते क्योंकि क्रोध करने वाला कोई बड़ा व्यक्ति है या समाज में प्रतिष्ठा का पात्र बना बैठा है अथवा बहुत धनी है। हम किसी भी तरह से उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते, मुकाबला भी नहीं कर सकते। तब हम क्रोध को अपने भीतर दबा देते हैं, परंतु जब हम लगातार क्रोध को दबाते चले जाते हैं तो यही क्रोध 'वैर' का रूप धारण कर लेता है। इसलिए लेखक ने इस वैर को क्रोध का अचार या मुरब्बा कहा है।

3. उपसंहार

- मुख्यतः दूसरे पर क्रोध बढ़ने के क्रमशः तीन कारण होते हैं-पहला हमें किसी की बात बुरी लगी हो। दूसरा वह बात बुरी लगने के कारण सहन न होती हो और तीसरा सहन न होने की स्थिति में वह दुःखयुक्त क्रोध व्यक्ति के अंदर ही जमा हो जाए। इन तीनों स्थितियों के बाद जो क्रोध की अवस्था होती है उसे 'अमर्ष' कहते हैं। यह अमर्ष वस्तुतः वह दुःख या द्वेष है, जो विपक्षी या शत्रु का कोई उपकार अथवा बुरा न कर सकने के कारण पैदा होता है।
- इस प्रकार लेखक ने दैनिक जीवन में विभिन्न अवसरों पर पैदा होने वाले क्रोध, उसके प्रकट करने के तरीके, उससे होने वाली हानियाँ, उससे होने वाले समाज के हित तथा क्रोध के विभिन्न रूपों के मनोवैज्ञानिक वर्णन कर क्रोध पर विवेक का संयम रखने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है ताकि क्रोध के अंधेपन में व्यक्ति अपना संतुलन ही न खो बैठे।

**भाषा और शैली**

- शुल्क जी की भाषा गंभीर, तत्समनिष्ठ, साहित्यिक और प्रभावोत्पादक है। विषय के अनुरूप लेखक ने इस निबंध में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक किया है, जैसे - साक्षात्कार, मनोविकार, आविर्भाव, विवेक, अंकुश, परदुःखकातरता आदि। परंतु विषय के अनुकूल देशज और विदेशी शब्दों, जैसे - मुरब्बा, चिड़चिड़ाहट, फुर्तीला, दुनियादार, मट्ठा, तमाचा आदि को भी सहज ही स्वीकार किया है। भाषा की सबसे बड़ी विशेषता समासयुक्त और संधियुक्त होना है, जैसे मनोविकार, परपीड़कोन्मुख, आविर्भाव आदि शब्दों के साथ ही वह विभिन्न उपसर्गयुक्त शब्दों का प्रयोग भी सहज ही कर देते हैं, जैसे प्रतिकार, परिज्ञान, अनन्य आदि।
- विचारात्मक निबंध गंभीर होता है। उसमें अधिकतर सूत्र-शैली का प्रयोग किया जाता है। छोटे-छोटे अर्थगर्भित वाक्यों में गागर में सागर भरने का शुक्ल जी का प्रयास सचमुच प्रशंसनीय है, जैसे- क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है।

इतना ही नहीं विभिन्न ऐतिहासिक तथा पौराणिक कथानकों का बेहतरीन तरीके से संदर्भ देकर लेखक ने क्रोध निबंध की रोचकता और उपयोगिता को बढ़ा दिया है।

**अपना मूल्यांकन कीजिए**

1. क्रोध का हमारे जीवन क्या स्थान है? अपने जीवन से उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. क्रोध करने से क्या हानि हो सकती है? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।
3. शुक्ल जी ने क्रोध को अंधा क्यों कहा है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
4. वैर को क्रोध का अचार या मुरब्बा क्यों कहा गया है?